

माघ वदि 2
JANUARY

27
2024

SATURDAY

पवित्रशायक
पंचम दिवस



सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

मातृश्री सुंगीदेवी जुगराजजी एवं भ्राताश्री आनंदकुमार वेदमुथा के दिव्यारोष से
राधवी शा. कांतिलाल-विमलादेवी, देवीचन्द-मंजुदेवी, आनंदकुमार-सोवनदेवी,
महावीरकुमार-इन्द्रादेवी, अफुशकुमार-दिव्यादेवी
सुपुत्री : सुरज, नीलम, कविता, पिकी, सोनु, हिना
बेटा-पोता शा. जुगराजजी सरमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मेषदुत अपरेल गार्मेंट्स, बंगलुरु



सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

मातृश्री सुमदीदेवी पुरवराजजी खुमाजी वेदमुथा के दिव्यारोष से
शा. जुगराज, मुकेशकुमार, दिनेशकुमार, यशकुमार, इंदीराकुमार
बेटा-पोता-पड़पोता शा. पुरवराजजी खुमाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : ब्लू स्टार इलेक्ट्रिकल्स, विजयवाड़ा - दिल्ली



शाम की नवकारशी के लाभार्थी

मातृश्री शांतिदेवी कानमलजी खीमाजी वेदमुथा के दिव्यारोष से
एवं श्रीमती पुष्पादेवी-मोहनलालजी कानमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : ललितकुमार-हेमादेवी, संतोषकुमार-पूजादेवी
पुत्री-जमाईसा : ममता-अनीतजी मांडोत,
नीतु-सचिनजी कटारिया राधवी • पौत्र-पौत्री : यश, पूव, आर्यन, जिया
बेटा-पोता-पड़पोता शा. कानमलजी खीमाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : एम. एक्स. ग्रुप, बंगलुरु - स्टॉकहोम - लंदन

जिनमंदिर

जगत में सर्वोत्कृष्ट वास्तु
जिनमंदिर का होता है। विशुद्ध व
प्रभाव संपन्न क्षेत्र में श्रेष्ठतम माप,
आकार, दिशा, कोण आदि वास्तु
सिद्धान्तों के श्रेष्ठतम समन्वय से
बने महा-मंगलकारी स्थापत्य
का नाम है जिनमंदिर।

पिरामीड जैसा प्रभाव धरने वाला
होता है मंदिर का शिखर। प्रासाद-
पुरुष, सदा ही मंगलकारी कलश
एवं श्रेष्ठतम चौदह स्वर्णों में से
एक ऐसे ध्वज आदि को उनके
प्रभाव को विधिपूर्वक जागृत कर
के शिखर पर स्थापित किया
जाता है। ऐसे मंगल प्रतीकों से
युक्त होता है जिनमंदिर।

जैसे सिद्धचक्र आदि यंत्र दिखने
में जड़ होने पर भी चैतन्य पर
अपना मंगल प्रभाव बताते
हैं, उसी तरह जिनमंदिर रूपी
महायंत्र का भी हमारे चैतन्य पर
बड़ा ही कल्याणकारी व जीवंत
प्रभाव होता है।